Toppersnotes
Unleash the topper in you

UP - PET

प्राथमिक अर्हता परीक्षा

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

भाग – 2

हिन्दी, अंग्रेजी एवं सामान्य विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

हिन्दी

1. संधि 1
2. लिंग 7
3. विलोम शब्द 12
4. पर्यायवाची 19
5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 30
6. शब्द युग्म (समश्रुत भिन्नार्थक शब्द) 35
7. मुहावरे 46
8. लोकोक्ति 58
9. वर्तनी शुद्धि 74
10. वाक्य रचना 77
11. वाक्य शुद्धि 81
12. शुद्ध वाक्य 84
13. रचना एवं रचनाकार (गद्य एवं पद्य) 91
14. अपठित गद्यांश 99

❖ हिन्दी व्याकरण (अन्य महत्वपूर्ण विषय)

English

1. Noun 111
2. Pronoun 117
3. Adjective 121
4. Verb 127
5. Adverb 132
6. Preposition 137
7. Conjunction 145
8. Article 149
9. Time and Tense 155

10. Subject-Verb Agreement 161
11. Narration 166
12. Voice 173
13. Synonyms & Antonyms 179
14. Reading Comprehension 192

भौतिक विज्ञान

1. भौतिक राशियाँ 199
2. गति एवं बल 199
3. गुरूत्वाकर्षण 203
4. कार्य, शक्ति एवं ऊर्जा 205
5. आवर्त गति एवं तरंग 206
6. उष्मा 210
7. विद्युत धारा 212
8. चुम्बकत्व 214
9. प्रकाश 215
10. दाब, बल, पृष्ठ तनाव एवं श्यानता 220
11. मशीन 222
12. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी 223
13. परमाणु भौतिकी 224
14. इलेक्ट्रॉनिक्स 225
15. संचार प्रणाली 226

रसायन विज्ञान

1. द्रव्य 229
2. पदार्थों की भौतिक अवस्थाओं का अन्तः परिवर्तन 234
3. परमाणु संरचना एवं आवर्त सारणी 234
4. अम्ल, क्षार एवं लवण 239
5. विलयन 241
6. **pH** 243

7. बहुलक 244
8. मानव जीवन में रसायन 246

जीव विज्ञान

1. जीव विज्ञान की शाखाएँ 253
2. जन्तु जगत 253
3. कोशिका 255
4. पाचन तंत्र 256
5. पोषण 258
6. रक्त 260
7. परिसंचरण तंत्र 262
8. हार्मोन्स (अंतःस्रावी तंत्र) 264
9. कंकाल तंत्र 268
10. उत्सर्जन तंत्र 269
11. प्रजनन तंत्र 271
12. श्वसन तंत्र 273
13. मानव रोग 274
14. पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता 280

❖ दैनिक जीवन विज्ञान संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

हिन्दी

संधि

- संधि का शाब्दिक अर्थ – मेल/जोडना
- संधि का संधि विच्छेद – सम् + धि
- संधि शब्द का विलोम – विग्रह/विच्छेद
  जैसे :- जगत् + ईश – जगदीश

- संधि – दो या दो से अधिक वर्णो के मेल होने से वर्णो में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें संधि कहते है ।

- संधि सदैव समान अर्थ में होती है । विरोधी अर्थो में संधि नहीं होती है ।

- विश्व + अनाथ – विश्वनाथ – विश्व नाथ
  विश्व + अमित्र – विश्वामित्र – विश्व मित्र
  दीन+अनाथ – दीनानाथ – दीन नाथ
  षट् + अंग – षडग
- संधि में सदैव वर्णो में विकार परिवर्तन उत्पन्न होना चाहिए तो संधि होती है । यदि वर्णो में विकार उत्पन्न नहीं होता है तो संधि नहीं होकर वह संयोग कहलाता है ।

- अन् + उचित / अनुचित
  संयोग – नि: + अर्थक / निरर्थक
  सम् + उचित / समुचित

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

- स्वर संधि :- यदि स्वर के बाद स्वर आता है तो स्वर में विकार उत्पन्न हो जाता है उसे स्वर संधि कहते है ।

स्वर संधि के पाँच भेद :-

1. दीर्घ स्वर संधि :- (आ, ई, ऊ)

नियम

1. यदि अ/आ के बाद सवर्ण अ या आ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'आ' हो जाता है ।

2. इ या ई के बाद सवर्ण इ या ई आता है दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ई' हो जाता है ।

- नियम 3 – यदि उ या ऊ के बाद सवर्ण उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ऊ' हो जाता है ।
- उदाहरण – अ /आ या आ /अ

दाव + अग्नि = दावाग्नि जगंल की आग
राम + अयन = रामायण
पंच + आयत = पंचायत
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
दीप + अवली = दीपावली

वडवा + वडव अग्नि – वडवाग्नि समुद्र की आग
काम + अग्नि – कामाग्नि
जठर + अग्नि – जठराग्नि पेट की आग
रवि + इन्द्र – रवीन्द्र
कवि + ईश – कवीश
नदी + ईश – नदीश
मही + इन्द्र – महीन्द्र
वधू + उल्लास – वधूल्लास
चमू + उल्लास – चमूल्लास
भानु + उदय – भानूदय
धेनू + उत्सव – धेनूत्सव

2. <u>गुण सन्धि</u> –

नियम 1 – अ, आ के बाद इ या ई आये तो ए हो जाता है ।
नियम 2 – अ, आ के बाद उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है ।
नियम 3 – अ, आ के बाद ऋ आता है तो दोनो के स्थान पर 'अर' हो जाता है ।

उदाहरण – महा + ईश – महेश
महा + इन्द्र – महेन्द्र
रमा + ईश – रमेश
गण + ईश – गणेश
राका + ईश – राकेश
हर्षीक + ईश – हर्षीकेश
वसंत + उत्सव – वसंतोत्सव
गंगा + उत्सव – गंगोत्सव
गंगा + ऊर्मि – गंगोर्मि
समुद्र + ऊर्मि – समुद्रोर्मि
शीत + उत्सव – शीतोत्सव
महा + ऋषि – महर्षि

- <u>सन्धि</u> –

नियम 1 – अ, आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।
नियम 2 – यदि अ, आ के बाद ओ या औ आता है तो दोनो के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

उदाहरण – सदा + एव – सदैव
महा + ऐश्वर्य – महैश्वर्य
महा + ओज – महौज
महा + ओघ – महौघ
जल + ओघ – जलौघ
महा + औषधि – महौषधि
महा + औषधालय – महौषधालय
एक + एक – एकैक
तथा + एव – तथैव

अपवाद :-
प्र + ऊढ – प्रौढ
अक्ष + ऊहिनी – अक्षौहिनी
स्व + ईरिणी – स्वैरिणी नदी को कहते है
शुद्ध + ओदन – शुद्धोदन

4. यण् सन्धि

नियम 1 – इ, ई के बाद असमान स्वर आता है तो इ ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है ।
नियम 2 – उ, ऊ के बाद असमान स्वर आता है तो उ ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है ।
नियम 3 – ऋ के बाद असमान स्वर आता है तो ऋ के स्थान पर 'र्' हो जाता है ।

अक्षर से पहले आधा अक्षर आता है तो 99% यण सन्धि होगी ।

उदाहरण –
अधि + अयन – अध्ययन
अधि + आय – अध्याय
अनु + अय – अन्वय
गुरू + आदेश – गुर्वादेश
भानु + आगम – भान्वागम
सु + आगत – स्वागत
सु + आर्थ – स्वार्थ
सु + अच्छ – स्वच्छ
सु + अल्प – स्वल्प
मातृ + आज्ञा – मात्राज्ञा
पितृ + आज्ञा – पित्राज्ञा
मातृ + आदेश – मात्रादेश
भ्रातृ + ऐश्वय – भ्रात्रैश्वर्य
धातृ + अंश – धात्रैश

5. अयादि सन्धि

नियम 1 – ए के बाद कोई भी स्वर आता है तो ए के स्थान पर अय् हो जाता है।
नियम 2 – ऐ के बाद कोई भी स्वर आता है तो ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है ।
नियम 3 – ओ के बाद कोई स्वर आता है तो ओ के स्थान अव् हो जाता है ।
नियम 4 – औ के बाद कोई स्वर आता है तो औ के स्थान पर आव् हो जाता है ।

उदाहरण –
ने + अन – नयन
गै + अन – गायन
पो + इत्र – पवित्र
श्रो + अन – श्रवण

रौ + अन – रावण
विधै + अक – विधायक
चे + अन – चयन

पो + अन – पवन
धौ + अक – धावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि – व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो व्यंजन मे विकार उत्पन्न हो जाता है उसे व्यंजन सन्धि कहते है ।

नियम 1 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि काई स्वर आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –
जगत् + ईश –जगदीश
वाक् + ईश्वर – वागीश्वर
वाक् + ईश्वरी – वागीश्वरी
उत् + आहरण – उदाहरण

नियम 2 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या य,व, र वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –
सत् + धर्म – सद्धर्म
षट् + रस – षड्रस
षट् + रिपु – षड्रिपु
अप् + ज – अब्ज (कमल)
अप् + द – अब्द (बादल)

नियम 3 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है और ह के स्थान पर भी उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

उत् + हार – उद्धार
तत् + हित – तद्धित
रत्नमुट् + हिंसा – रत्नमुंडिसा
वाक् + हरि – वाग्धरि

नियम 4 – यदि किसी 'वर्ग के चतुर्थ वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आता तो चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

वुध् + अध – बुद्धि
सिध् + ध – सिद्ध
लभ् + धि – लब्धि
युध् + ध – युद्ध

नियम 5 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर भी उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

जगत् + नाथ – जगन्नाथ
सत् + मति – सन्मति
मृत + मय – मृन्मय
मृत् + मूर्ति – मृन्मूर्ति
वाक् + मय – वाङ्मय

नियम 6 – यदि म के बाद क से लेकर म तक कोई वर्ण आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है या फिर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + धि – संधि/ सन्धि
सम् + गढन – संगठन
सम् + जय – संजय
अलम् + कार – अलंकार
शम् + कर – शंकर
सम् + कर – संकर

संगंठन – सङ्गठन – सडठन
अलंकार – अलङ्कार – अलडकार
शंकर – शडकर

नियम 7 – यदि म के बाद य र ल व ष श स ह आता है तो म के स्थान पर केवल अनुस्वार हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + यम – संयम
सम् + शोधन – संशोधन
सम् + सार – संसार
सम् + विधान – संविधान
सम् + हार – संहार

नियम 8 – सम् उपसर्ग के बाद क धातु से बने हुए शब्द
(कार, करण, कर्ता, कर) आदि आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है और बीच में स् का आधम हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + कार – संस्कार
सम् + कृत – संस्कृत
सम् + करण – संस्करण
सम् + कृति – संस्कृति

नियम – 9 यदि परि उपसर्ग के बाद कृ धातु से बने हुए शब्द (कार, कर्ण, कर्ता, कर, कृति) आते है तो बीच में मुर्धा ष् का आगम हो जाता है ।
कर्तव्य – सही कर्तव्य , कर्त्ता – सही कर्ता

उदाहरण –

परि + करण – परिष्करण
परि + कार – परिष्कार
परि + कर्ता – परिष्कर्ता

नियम 10 – यदि त् द् के बाद स्थ आता है तो स्थ के स् लोप हो जाता है ।

उदाहरण –

उत् + स्थान = उत्थान
उत् + स्थित = उत्थित जागना
उत् + स्थानम् = उत्थानम्

नियम 11 – यदि त द् के बाद क ख प फ त स आता है तो त्, द् के स्थान पर त् हो जाता है ।

उदाहरण –

उद् + कर्ष – उत्कर्ष
उद् + + तम – उत्तम
तद् + पुरूष – तत्पुरूष
संसद् + सत्र – संसत्सत्र
उद् + खनन – उत्खनन

नियम 12 – यदि निस् दुस् उपसर्ग के बाद क, ट, प, फ आता है तो निस् दुस् के स् के स्थान पर मुर्धा ष् हो जाता है ।

उदाहरण –

निस् + कर्ष – निष्कर्ष
निस् + टंकार – निष्टंकार (आवाज न करना)
दुस् + कर्म – दुष्कर्म
दुस् + पाप – दुष्पाप
दुस् + फल – दुष्फल

नियम 13 – ष के बाद त, थ आता है तो त के स्थान पर ट, एवं थ के स्थान पर ठ हो जाता है ।

उदाहरण – सृप् + ति – सृष्टि
दृष् + ति – दृष्टि
हृष् + त – हृष्ट
पुष् + त –पुष्ट
षष् + थ – षष्ठ

नियम 14 – यदि इ/उ के बाद स आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है ।

उदाहरण – अभि +सेक – अभिषेक
नि + संग – निषंग
नि + सेध –निषेध
वि + सम – विषम
सु + समा – सुषमा

नियम 15 - यदि इ/उ के बाद स्थ आता है तो स्थ के स्थान पर ष्ठ हो जाता है ।

उदाहरण – नि + स्था – निष्ठा
प्रति + स्था – प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित –प्रतिष्ठित
युधि + स्थिर – युधिष्ठिर

नियम – 16 यदि किसी स्वर के बाद अगर छ आता है तो बीच में च् का आगम हो जाता है ।

उदाहरण – अनु + छेद – अनुच्छेद
वि + छेद – विच्छेद
परि + छेद– परिच्छेद (चारों तरफ का)
मातृ + छाया – मातृच्छाया
लक्ष्मी + छाया – लक्ष्मीच्छाया

नियम 17– यदि त्/द के बाद अगर च, छ आता है तो त् द् के स्थान पर भी च् हो जाता है ।

उदाहरण – सत् + चित = सच्चित
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + छेद = उच्छेद
उत् + चारण = उच्चारण
उत् + छिन्न = उच्छिन्न
शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

नियम 18 – यदि त्, द् के बाद ज या झ आता है तो त् द् के स्थान पर भी ज् हो जाता है।

उदाहरण –

विद्युत् + ज्योति = विद्युज्जयोति
जगत् + ज्वाला = जगज्जवाला (जगत की ज्वाला)
उत् + ज्वल = उज्जवल
वहत् + झंकार = वहज्झंकार
महत् + झंकार = महज्झंकार

नियम 19 –यदि क, त्, द् के बाद ट, ठ हो तो त् द् के स्थान पर भी ट् हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + टीका = तट्टीका
वृहत् + टीका = वृहट्टीका

2. त्, द् के बाद ड, ढ हो तो ड् हो जाता है ।

उदाहरण –

उत् + डयन = उड्डयन
उत् + डीन = उड्डीन

नियम 20 – त् द् के बाद ल हो तो त् द् के स्थान पर भी ल् हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + लीन = तल्लीन
तत् + लय = तल्लय
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + लिखित = उल्लिखित

नियम 20 – यदि न् के बाद ल् हो तो न् का ल् हो जाने पर न् से पूर्व आए वर्ण पर अर्द्धचन्द्र बिन्दु का आगम हो जाता है ।

उदाहरण –

विद्वान् + लिखति – विद्वाँल्लेख
महान् + लिखति – महाँल्लिखति
महान् + लेख – महाँल्लेख
विद्वान् + लेख – विद्वाँल्लेख

नियम 21 – यदि त् द् के बाद ष आता है तो त, द् के स्थान च् हो जाता है और ष के स्थान पर छ हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + शिव – तच्छिव
उत् + श्वास – उच्छ्वास
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र – श्रीमच्छरचन्द्र

नियम 22 –यदि अहन् के बाद र से भिन्न वर्ण आता है तो न् के स्थान पर र् हो जाता है ।

उदाहरण –

अहन् + पति – अहपति (दिन का स्वामी)
अहन् + ऐश्वर्य – अहरैश्वर्य
अहन् + गण – अहगण
अहन् + अहन् – अहरह

अहन् के बाद अहन आता है तो अन्तिम न् का लोप हो जाता है।

नियम 23 –यदि अहन् के बाद र वर्ण आता है तो अहन् के स्थान पर अहो हो जाता है ।

उदाहरण–

अहन् + रथ – अहोरथ
अहन् + रूप – अहोरूप
अहन् + रात्रि – अहोरात्रि – अहोरात्र
अहोरात्र द्वन्द्व समास

नियम 24 – ऋ, र ष के बाद न का ण हो जाता है ।

उदाहरण –

प्र + नाम – प्रणाम
परि + नाम – परिणाम
परि + नय – परिणय
ऋ + न – ऋण
राम + अयन – रामायण दीर्घ
मीरा + अयन – मीरायण दीर्घ

नियम 25 – यदि म से पहले च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग या श स, ह, ल आता है तो न का ण नहीं होता है ।

उदाहरण –

रस + अयन – रसायन
दक्षिण + अयन – दक्षिणायन
राजा + अयन – राजायन

वर्णलोप –

पक्षिन् + राज – पक्षिराज
प्राणिन् + नाथ – प्राणिनाथ
युवन् + राज – युवराज
प्रणिन् + शास्त्र – प्राणिशास्त्र

विसर्ग सन्धि (:)

विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो विसर्ग स्थान पर विकार उत्पन्न हो जाता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है ।

नियम 1 – यदि विसर्ग के बाद त, थ आता है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है ।

उदाहरण –

नमः + ते – नमस्ते
मनः + ताप – मनस्ताप
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण (सिर की रक्षा करना)
बहिः + थल – बहिस्थल
मनः + त्याग – मनस्त्याग
निः + तेज – निस्तेज

नियम 2 – यदि विसर्ग के बाद च, छ आता है तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है ।

उदाहरण –

निः + चय – निश्चय
निः + छल – निश्छल
मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक
दुः + छल – दुश्छल
आः + चय – आश्चर्य
मनः + चिकित्सा –मनश्चिकित्सा

नियम 3 – यदि विसर्ग से पहले इ या उ और विसर्ग के बाद क ह ट प फ म आता है तो विसर्ग के बाद क ह ठ प जाता है ।

उदाहरण –

धनुः + टंकार – धनुष्टंकार
आविः + कार – आविष्कार
आयुः + मति – आयुष्मति
आयुः + मान – आयुष्मान
चतुः + पाद – चतुष्पाद
चतुः + कोण – चतुष्कोण
परिः + कार – परिष्कार

नियम 4 – यदि विसर्ग के बाद (ष , श , स) आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है या फिर बाद वाला वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

नमः + शिवाय – नमः शिवाय
नि : + शुल्क – निः शुल्क
दुः + स्वप्न – दुः स्वप्न

दुः + शासन – दुः शासन
प्रातः + स्मरण – प्रातः स्मरण

नमश्शिवाय, निश्शुल्क, दुस्स्वप्न, दुश्शासन, प्रातस्स्मरण

नियम 5 – यदि विसर्ग से पहले अ, आ हो और विसर्ग के बाद कृ धातु (कार, कृत, कृति, करण कर्ता) से बने शब्द आते हैं तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है ।

उदाहरण –
पुरः + कार – पुरस्कार
तिरः + कार – तिरस्कार
भाः + कार – भास्कर
नमः + कार –नमस्कार
वाचः + पति – वाचस्पति
गृहः + पति – गृहस्पति
बृहः + पति – बृहस्पति

नियम 6 – यदि विसर्ग के पहले अ, इ, उ, हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण हो (य र व ल ह) स्वर आता है तो विसर्ग के स्थान पर र् हा जाता है ।

उदाहरण –
दुः + गम – दुर्गम
निः + धन – निर्धन
पुनः + विवाह – पुनर्विवाह
आशीः + वाद – आशीर्वाद
निः + अन्तर – निरन्तर
पुनः + वास – पुनर्वास
निः + बल – निर्बल
निः + अभ्र – निरभ्र
निरन्तर, दुरात्मा, निरजंन, निरभ्र – बिना बादल

नियम 7 – यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले इ या उ का दीर्घ हो जाता है ।

उदाहरण –
निः + रस – नीरस
निः + रोग – नीरोग
दुः + राज – दूराज
निः + रज – नीरज
नीर + ज – जल में जन्म लेने वाला

नियम 8 – यदि विसर्ग से पहले से अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो पहले वाला अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले अ अवग्रह चिह्न हो जाता है ।

उदाहरण–
कः + अपि – कोऽपि
मनः – अनुकूल – मनोऽनुकूल
मनः + अभिलाषा – मनोऽभिलाषा
शिवः + अर्च्य – शिवोऽर्च्य

नियम 9 –
यदि पदान्त अ के परे विसर्ग हो और विसर्ग के परे कोई सघोष व्यंजन अथवा य, र, ल, व, ह् में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ + : = अः के स्थान पर 'ओ' हो जायेगा ।

उदाहरण –
मनः + ज – मनोज
मनः + हर – मनोहर
अधः + गति – अधोगति
मनः + विज्ञान – मनोविज्ञान
सरः + ज – सरोज
यशः + दा – यशोदा

नियम 10 – यदि विसर्ग के बाद क ख प फ आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है

उदाहरण –
प्रातः + काल – प्रातः काल
नाभः + कतन – नाभः केतन
अन्तः + पुर – अन्तः पुर
मनः + पूत – मनः पूत

लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है– चिह्न या पहचान ।
लिंग से तात्पर्य भाषा के ऐसे प्रावधानों से है जो वाक्य के कर्ता के स्त्री, पुरुष, निर्जीव होने के अनुसार बदल जाते है । विश्व की लगभग एक चौथाई भाषाओं में किसी न किसी प्रकार की लिंग व्यवस्था है ।

हिन्दी में दो लिंग होते है – पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग, जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते है– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग । फारसी जैसे भाषाओं में लिंग नहीं होता, और भी अंग्रेजी में लिंग सिर्फ सर्वनाम में होता है ।

उदाहरण

- मोहन पढता है– पढता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढती' है ।
- गीता गाती है– यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है ।

लिंग की परिभाषा (Definition of Gender)

- लिंग संस्कृत का शब्द होता है जिसका अर्थ होता है निशाना । जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते हौ इससे यह पता चलता है की वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है।

उदाहरण

- पुरुष जाति में बैल, बकरा, मोर, मोहन, लडका, हाथी, शेर, घोडा, दरवाजा, पंखा, कुत्ता, भवन, पिता, भाई आदि ।
- स्त्री जाति में गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लडकी, हथनी, शेरनी, घोडी, खिडकी , कुतिया, माता, बहन आदि।

लिंग के निर्माण में आई कठिनाई और उसका हल

- हिंदी में लिंग के निर्णय का आधार संस्कृत के नियम ही है । संस्कृत में हिंदी से अलग एक तीसरा लिंग भी है जिसे नपुंसकलिंग कहते है । नपुंसकलिंग में अप्राणीवाचक संज्ञाओं को रखा जाता है। हिंदी में अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग निर्णय में सबसे अधिक कठिनाई हिंदी न जानने वालों को होते है ।
- जिनकी मातृभाषा हिंदी होती है उन्हें सहज व्यवहार के कारण लिंग निर्णय में परेशानी नहीं होती लेकिन इनमें भी एक समस्या है की कुछ पुल्लिंग शब्दों के पर्यायवाची स्त्रीलिंग है और कुछ स्त्रीलिंग के पुल्लिंग । जैसे :- पुस्तक को स्त्रीलिंग कहते है और ग्रन्थ को पुल्लिंग कहते है ।

हिंदी में लिंग

व्याकरणाचार्य ने लिंग निर्णय के कुछ नियम बताये है लेकिन उन सभी में अपवाद है । लेकिन फिर भी लिंग निर्णय के कुछ नियम इस प्रकार है –

1. जब प्राणीवाचक संज्ञा पुरुष जाति का बोध कराएँ तो वे पुल्लिंग होते है और जब स्त्रीलिंग का बोध कराएँ तो स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- कुत्ता, हाथी, शेर पुल्लिंग है और कुतिया, हथनी, शेरनी स्त्रीलिंग है ।
2. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा पुरूष जाति का बोध कराएँ तो वे पुल्लिंग होते है और जब स्त्रीलिंग का बोध कराएँ तो स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- खरगोश, खटमल, गैंडा, भालू, उल्लू आदि ।
3. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा जब पुरूष और स्त्री दोनों का बोध कराएँ तो वे नित्य स्त्रीलिंग में शामिल हो जाते है ।
   जैसे :- कोमल, चील, तीतली, छिपकली आदि ।

लिंग के भेद

संसार में तीन जातियाँ होती है – पुरूष, स्त्री, जड । इन्ही जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये है ।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

पुल्लिंग क्या होता है –
जिन संज्ञा के शब्दों से पुरूष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते है ।
जैसे :- पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, बंदर, हंस, बकरा, लडका, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, दुःख, प्रेम, लगाव, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि ।

पुल्लिंग अपवाद

पक्षी, फरवरी, एवरेस्ट, मोतिया, दिल्ली, स्त्रीत्व आदि ।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के पीछे अ, त्व, आ, आव, पा, पन, न आदि प्रत्यय आये वे पुल्लिंग होते हैं जैसे :- मन, तन, वन, शेर, राम, कृष्ण, स्तीत्व, देवत्व, मोटापा, चढाव, बुढापा, लडकपन, बचपन, लने -देन आदि ।
2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- हिमालय, हिमाचल, विंध्याचल, सतपुडा, आल्पस, यूराल, कंचनजंगा, फ्यूजियामा, कैलाश, मलयाचल, माउण्ट एवरेस्ट आदि ।
3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि ।
4. देशों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- भारत, चीन, ईरान, यूनान, रूस, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, उत्तरप्रदेश, हिमाचल, मध्यप्रदेश आदि ।
5. धातुओं के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- सोना, ताँबा, पीतल, लोहा, चाँदी, पारा आदि ।
6. नक्षत्रों के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- सूर्य, चन्द्र, राहु, आकाश, शनि, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्र आदि ।
7. महीनों के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- फरवरी, मार्च, चैत्र, आषाढ, फाल्गुन आदि ।
8. द्रवों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- पानी, तेल, पेट्रोल, घी, शरबत, दही, दूध आदि ।
9. पेडों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- केला, पपीता, शीशम, सागौन, जामुन, बरगद, पीपल, नीम, आम, अमरूद, देवदार, अनार, अशोक, पलाश आदि ।
10. सागर के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर, अरब महासागर आदि ।
11. समय के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- घंटा, पल, क्षण, मिनट, सेकण्ड आदि
12. अनाजों के नाम भी पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- गेहूँ, बाजरा, चना, जौ आदि ।
13. वर्णमाला के अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, च, छ, य, र, ल, व श आदि ।
14. प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुरुष जाति का ही बोध कराते हैं ।
   जैसे :- बालक , गीदड, कौआ, कवि, साधु, खटमल, भेडिया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी आदि।
15. समूह वाचक संज्ञा भी पुल्लिंग होती है । जैसे :- मण्डल, समाज, दल, समूह, सभा, वर्ग, पंचायत आदि।
16. भारी और बेडौल वस्तु भी पुल्लिंग होती है ।
   जैसे :- जूता, रास्ता, पहाड, लोटा आदि ।
17. रत्नों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- नीलम, पुखराज, मूँगा, माणिक्य, पन्ना, मोती, हीरा आदि ।
18. फूलों के नाम पुल्लिंग होते है ।
   जैसे :- गेंदा, मोतिया, कमल, गुलाब आदि ।
19. द्वीप भी पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- अंडमान-निकोबार जावा, क्यूबा, न्यू फाउंलैंड आदि ।
20. शरीर के अंग पुल्लिंग होते हैं । जैसे :-हाथ, पैर, गला, अंगूठा, कान, सिर मुँह, घुटना, हृदय, दांत, मस्तक आदि ।
21. दान, खाना, वाला से खत्म होने वाले शब्द हमेशा पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- खानदान, पीकदान, दवाखाना, डेलखाना, दूधवाला, दुकान वाले आदि ।
22. आकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होती है ।
   जैसे :- गुस्सा, चश्मा, पैसा, छाता आदि ।

स्त्रीलिंग क्या होता है -

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते है जैसे :- हंसिनी, लडकी, बकरी, माता, रानी, जूं, सुंई गर्दन, लडजा, घोडी, कुतिया, बंदरिया, कुर्सी, पत्नी, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, औरत, शेरनी, नारी, झोंपडी, लोमडी आदि ।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे :- जनवरी, मई, जुलाई, पृथ्वी, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूँग, चाय, कॉफी, लस्सी, चटनी, इ, ई, ऋ, जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय

जब पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तब प्रत्ययों को शब्दों में जोडा जाता है जिन्हें स्त्रीलिंग प्रत्यय कहते हैं ।
जैसे :- ई = बडा - बडी, भला- भली आदि ।
इनी = योगी - योगिनी , कमल- कमलिनी आदि ।
इन = धोबी - धोबिन, तेल - तेली आदि ।
नि = मोर - मोरनी, चोर - चोरनी आदि ।
आनी = जेठ - जेठानी , देवर देवरानी आदि ।
आइन = ठाकुर - ठकुराइन, पंडित - पण्डिताइन आदि ।
इया = बेटा - बिटिया, लाटो - लुटिया आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. जिन संज्ञा शब्दों के पीछे ख, ट, वट, हट, आनी आदि आयें वे सभी स्त्रीलिंग होते है
   जैसे :- कडवाहट, आहट, बनावट, शत्रुता, मूर्खता, मिठाई, छाया, प्यास, ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख झंझट, आहट, चिकनाहट सजावट, इन्द्राणी, जेठानी, ठकुरानी, राजस्थानी आदि ।
2. अनुस्वारांत, ईकारांत, ऊकारांत, तकारांत, सकारांत आदि संज्ञाएँ आती है वे स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, बालू, दारू, सरसों, खडाऊं, प्यास, वास, साँस, नानी, बेटी, मामी, भाभी आदि
3. भाषा, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे :- हिंदी, संस्कृत, देवनागरी, पहाडी, अंग्रेजी, पंजाबी गुरुमुखी, फ्रांसीसी , अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली रूसी आदि ।
4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग हाते है :- जैसे :- गंगा, यमुना, गोदावरी , सरस्वती, रावी, कावेरी, कृष्णा, व्यास, सतलज, झेलम, ताप्ती, नर्मदा आदि ।
5. तरीखो और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसेः- पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, पृथ्वी, अमावस्या, एकादशी, चतुर्थी, प्रथमा आदि ।
6. नक्षत्रो के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसे :- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, स्वे ती, मृगशिरा, चित्रा आदि ।
7. हमेशा स्त्रीलिंग रहने वाली संज्ञा होती है । जैसे :- मक्खी, कोयल, मछली, तितली, मैना आदि ।
8. समूहवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- भीड, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि ।
   प्राणीवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- धाय, संतान, सौतन आदि ।
9. पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे :- कुरान, रामायण, गीता, रामचरितमानस, बाइबल, महाभारत आदि ।
10. आहारो के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
    जैसे :- सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी, पकोडी आदि ।
11. शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते है जैसे :- आँख, नाक, जीभ, पलक, उँगली, ठोडी आदि ।
12. अभुष्ण और वस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसे :- साडी, सलवार, चुन्नी, धोती, टोपी, पेंट, कमीज, पगडी माला, चूडी, बिंदी, कंघी, नथ, अंगूठी आदि ।
13. मसालों के नाम भी स्त्रीलिंग होते है ।
    जैसे :- दालचीनी लौंग, हल्दी, मिर्च, धनिया, इलायची, अजवाइन, सौंफ, चाय आदि ।
14. राशि के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसे :- कुम्भ, मीन, तुला, सिंह, मेष, कर्क आदि ।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार है

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्टप्रति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार गवर्नर, वकी, डॉक्टर, सेक्रेटरी प्रोफेसर, शिशु दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, श्रवास, मंत्री आदि ।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार है

1. अ, आ पुल्लिंग शब्दों को जब 'ई' कर दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग हो जाते है । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - गूँगा = गूँगी
   - गधा = गधी
   - देव = देवी
   - नर = नारी
   - नाला = नाली

2. जब अ, आ, वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है तो अ, आ, तथा वा की जगह पर इया लगा दिया जाता है । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है :-
   - लोटा = लुटिया
   - बन्दर = बंदरिया
   - बूढा = बुढिया
   - बेटा = बिटिया
   - चिडा = चिडिया

3. जब 'अक' जैसे तत्सम शब्दों में 'इका' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते है ।
   तत्सम शब्द + इका = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है ।
   - अध्यापक + इका = अध्यापिका
   - पत्र + इका = पत्रिका
   - चालक + इका = चालिका
   - सेवक + इका = सेविका
   - लेखक + इका = लेखिका
   - गायक + इका = गायिका

- पाठक + इका = पाठिका
- संपादक + इका = संपादिका

4. जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तो कभी कभी नर या मादा लगाना पडता है ।

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-

- तोता = मादा तोता
- खरगोश = मादा खरगोश
- मच्छर = मादा मच्छर
- जिराफ = मादा जिराफ
- खटमल = मादा खटमल
- मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ
- उल्लू = मादा उल्लू
- कोयल = नर कोयल
- चील = नर चील
- मकडी = नर मकडी
- भेड . = नर भेड
- मक्खी = नर मक्खी
- गिलहरी = नर गिलहरी
- मैना = नर मैना
- कछुआ = नर कछुआ
- भालू = मादा भालू
- भेडिया = मादा भेडिया

5. कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री -पुरुष के स्वयं में ही जोडे होते है । कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिल्कुल उल्टे होते है ।
पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है-

- राजा = रानी
- सम्राट = सम्राज्ञी
- पिता = माता
- भाई = बहन
- वर = वधू
- पति = पत्नी
- मर्द = औरत
- पुरुष = स्त्री
- बैल = गाय
- पुत्र = कन्या
- फूफा = बुआ =

6. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।
पुल्लिंग + आनी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है-

- ठाकुर + आनी = ठकुरानी
- सेठ + आनी = सेठानी
- चौधरी + आनी = चौधरानी
- देवर + आनी = देवरानी
- नौकर + आनी = नौकरानी
- इंद्र + आनी = इन्द्राणी
- जेठ +आनी = जेठानी
- मेहतर + आनी = मेहतरानी
- पंडित + आनी = पंडितानी

7. कभी कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में इन जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है । पुल्लिंग + 'इन' = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है -

- साँप + इन = साँपिन
- सुनार + इन = सुनारिन
- नाती + इन = नातिन
- दर्जी + इन = दर्जिन
- कुम्हार + इन = कुम्हारिन
- लुहार+ इन = लुहारिन
- माली + इन = मालिन
- धोबी + इन = धोबिन
- बाघ + इन = बाघिन

8. कभी कभी बहुत से शब्दों में 'आइन' जोडकर स्त्रीलिंग बनाए जाते है। पुल्लिंग + आइन = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-

- चौधरी + आइन = चौधराइन
- हलवाई + आइन = हलवाइन
- गुरु + आइन = गुरुआइन
- पंडित + आइन = पण्डिताइन
- ठाकुर + आइन = ठकुराइन
- बाबू + आइन = बबुआइन

9. जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर 'त्री' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग बन जाते हैं । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं –
   - नेता = नेत्री
   - दाता = दात्री
   - अभिनेता = अभिनेत्री
   - रचयिता = रचयित्री
   - विधाता = विधात्री
   - वक्ता = वक्त्री
   - धाता = धात्री

10. जब पुल्लिंग के जाति और भाव बताने वाले शब्दों में 'नी' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं । पुल्लिंग शब्द + नी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं ।
   - सियार + नी = सियारनी
   - हिन्दू + नी = हिन्दुनी
   - ऊँट + नी = ऊँटनी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

विलोम – शब्द

किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं ।

जैसे – (अमृत – विष), (दिन – रात)

(अ, आ) –

शब्द	विलोम
अमृत	विष
अन्धकार	प्रकाश
अनुराग	विराग
आगामी	गत
अनुज	अग्रज
अधिक	न्यून
आलस्य	स्फूर्ति
अपेक्षा	नगद
आहार	निराहार
आमिष	निरामिष
आजादी	गुलामी
आर्द्र	शुष्क
अनिवार्य	वैकल्पिक
अगम	सुगम
आकाश	पाताल
अनुग्रह	विग्रह
आश्रित	निराश्रित
आदान	प्रदान
आयात	निर्यात
आलस्य	स्फूर्ति
आदर्श	यथार्थ
अक्सर	कभीकभार
अनुलोम	प्रतिलोम
आगामी	विगत
अतल	वितल
आयात	निर्यात
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
आभ्यन्तर	बाह्य
आदत्त	प्रदत्त
अन्तरंग	बहिरंग

शब्द	विलोम
अथ	इति
अल्पायु	दीर्घायु
आदि	अंत
आकर्षण	विकर्षण
आदान	प्रदान
अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अनुकूल	प्रतिकूल
अल्प	अधिक
अमृत	विष
अभिमान	नम्रता
आशा	निराशा
अपमान	सम्मान
अनुज	अग्रज
आरंभ	अंत
आदर	अनादर
अनुपस्थित	उपस्थित
आलस्य	स्फूर्ति
अस्त	उदय
अनुरक्ति	विरक्ति
आग्रही	दुराग्रही
आच्छादित	अनाच्छादित
आगम	लोप
आदिष्ट	निषिद्ध
आशा	निराशा
आतुर	अनातुर
आधार	निराधार
आगामी	विगत
आरोह	अवरोह
अघ	अनघ
अवर	प्रवर

शब्द	विलोम
अंगीकार	अस्वीकार
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक
आधुनिक	प्राचीन
अधुनातन	पुरातन
आदान	प्रदान
आकाश	पाताल
आकीर्ण	विकीर्ण
आसक्त	अनासक्त
अतुकान्त	तुकान्त
अधः	उपरि
अनुग्रह	विग्रह
अधम	उत्तम
अज्ञ	विज्ञ
अकाल	सुकाल
अनैक्य	ऐक्य
आवश्यक	अनावश्यक
आदि	अनादि
आश्रित	निराश्रित
आवृत	अनावृत
आकुंचन	प्रसारण
अकाम	सुकाम
अर्पण	ग्रहण
अति	अल्प
अधिकारी	अनाधिकारी
अग्र	पश्च
अपना	पराया
अवनति	उन्नति
अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अन्तर्द्वन्द्व	बहिद्वन्द
अनेक	एक

अनाहूत	आहूत
अत्यधिक	अत्यल्प

अर्पित	गृहीत
अपेक्षा	उपेक्षा

अर्थी	प्रत्यर्थी

(इ, ई) –

शब्द	विलोम
इच्छा	अनिच्छा
इच्छित	अनिच्छित

शब्द	विलोम
इष्ट	अनिष्ट
इसका	उसका

शब्द	विलोम
इहलोक	परलोक
इकट्ठा	अलग

(उ, ऊ,) –

शब्द	विलोम
उदात्त	अनुदात्त
उर्ध्व	निम्न
उधार	नकद
उपाय	निरुपाय
उत्तम	अधम
उपसर्ग	प्रत्यय
ऊँच	नीच
उत्साह	निरुसाह
उद्धत	विनीत

शब्द	विलोम
उन्मुख	विमुख
ऊपर	नीचे
उदघाटन	समापन
उत्तरायण	दक्षिणायन
उत्थान	पतन
उत्तर	दक्षिण
उपभुक्त	अनुपभुक्त
उर्वर	ऊसर
उपसर्ग	प्रत्यय

शब्द	विलोम
उपमा	अनुपमा
उपयोग	दुरूपयोग
उग्र	सौम्य
उद्यम	निरुद्यम
उद्यमी	आलसी
उत्तम	अधम
उच्च	निम्न
उदयाचल	अस्ताचल
उत्कृष्ट	निकृष्ट

(ए, ऐ) –

शब्द	विलोम
एड़ी	चोटी
एकाग्र	चंचल
ऐहिक	पारलौकिक

शब्द	विलोम
एकल	बहुल
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
ऐक्य	अनैक्य

शब्द	विलोम
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
एकत्र	विकर्ण

(ओ, औ) –

शब्द	विलोम
ओजस्वी	निस्तेज

शब्द	विलोम
औपन्यासिक	अनौपन्यासिक

(क) –

शब्द	विलोम
कनीय	वरीय
कठिन	सरल
कुकृति	सुकृत्य
कदाचार	सदाचार
कसूरवार	बेकसूर

शब्द	विलोम
कुख्यात	विख्यात
क्रय	विक्रय
कीर्ति	अपकीर्ति
करुण	निष्ठुर
कृतज्ञ	कृतघ्न

शब्द	विलोम
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कपूत	सपूत
कुसुम	वज्र
कर्मण्य	अकर्मण्य
कठोर	कोमल

क्रिया	प्रतिक्रिया
कड़वा	मीठा
कृष्ण	शुक्ल
कलंक	निष्कलंक

क्रुद्ध	शान्त
कर्म	निष्कर्म
कपटी	निष्कपट
कर्कश	सुशील

कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कुरूप	सुरूप
कायर	निडर
कोप	कृपा

(ख) –

शब्द	विलोम
खिलना	मुरझाना
खेद	प्रसन्नता

शब्द	विलोम
खंडन	मंडन
खरा	खोटा

शब्द	विलोम
खीझना	रीझना
खगोल	भूगोल

(ग) –

शब्द	विलोम
गोचर	अगोचर
गद्य	पद्य
गणतन्त्र	राजतन्त्र
गर्मी	सर्दी
गहरा	छिछला

शब्द	विलोम
गीला	सूखा
गुण	दोष
गुप्त	प्रकट
गृहस्थ	संन्यासी
गमन	आगमन

शब्द	विलोम
गृहीत	त्यक्त
ग्राह्य	त्याज्य
गरल	सुधा
गत	आगत
गरीब	अमीर

(घ) –

शब्द	विलोम
घर	बाहर
घृणा	प्रेम

शब्द	विलोम
घात	प्रतिघात
घन	तरल

शब्द	विलोम
घरेलू	बाहरी

(च, छ)–

शब्द	विलोम
चर	अचर
चोर	साधु
चल	अचल
चंचल	स्थिर

शब्द	विलोम
चढाव	उतार
चतुर	मूढ
चेतन	अचेतन
छली	निश्छल

शब्द	विलोम
छाँह	धूप
छूत	अछूत

(ज, झ) –

शब्द	विलोम
जीवन	मरण
जंगम	स्थावर
जय	पराजय

शब्द	विलोम
ज्योति	तम
जीवित	मृत
ज्वार	भाटा

शब्द	विलोम
जोड़	घटाव
जड़	चेतन
जन्म	मृत्यु

जागरण	निद्रा	ज्योतिर्मय	तमोमय	जागृति	सुषुप्ति
जल	स्थल	जातीय	विजातीय	जल्द	देर

(त, थ)–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
ताप	शीत	थोड़ा	बहुत	तरुण	वृद्ध
तम	आलोक	तीव्र	मन्द	तृष्णा	वितृष्णा
तुच्छ	महान्	तिमिर	प्रकाश	तारीफ	शिकायत
तामसिक	सात्त्विक	तुकान्त	अतुकान्त	थलचर	जलचर
तरल	ठोस	थोक	फुटकर	तृषा	तृप्ति

(द)–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दिन	रात्रि	देव	दानव	दयालु	निर्दय
दीर्घकाय	लघुकाय	दुष्ट	सज्जन	दानी	कंजूस
दुर्बल	सबल	दोषी	निर्दोषी	दुर्जन	सज्जन
दाता	याचक	दुरुप्रयोग	सदुप्रयोग	दुर्दान्त	शांत
दूषित	स्वच्छ	दास	स्वामी	दुर्गन्ध	सुगन्ध
दुराचारी	सदाचारी	दूषित	स्वच्छ		

(ध)–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
धनी	निर्धन	धूप	छाँव	ध्वंस	निर्माण
धर्म	अधर्म	धरा	गगन	धीर	अधीर
धर्मात्मा	दुरात्मा	धृष्ट	विनीत	ध्वस्त	निर्धवस्त

(न)–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
नूतन	पुरातन	निर्मल	मलिन	नख	शिख
निर्माण	विनाश	निर्लज्ज	सलज्ज	निद्रा	जागरण
निरक्षर	साक्षर	नगर	ग्राम	निश्छल	छली
निन्दा	स्तुति	निर्दोष	सदोष	निषेध	विधि
नर	नारी	निरर्थक	सार्थक	न्यून	अधिक
निषिद्ध	विहित	नश्वर	शाश्वत	निरामिष	सामिष
नकरात्मक	सकरात्मक	निडर	कायर	नीरस	सरस